इंसाफ की रोशनी

वीणा शिवपुरी

कुसुम पांच साल पहले ब्याह कर इस घर में आई थी। घर में पति के अलावा बस एक देवर और ससुर थे। दो ननदों की शादी हो चुकी थी। कुसुम ने आते ही सबका मन मोह लिया। कुसुम का पति राम प्रसाद डाकखाने में बाबू था। वह छोटे भाई हरी के कॉलेज की पढ़ाई का ख़र्चा देता था। पिता स्कूल की मास्टरी से रिटायर हो चुके थे। सब उन्हें मास्टर जी कहते थे। शादी के दो साल बाद कुसुम के घर चांद सा बेटा जन्मा। वह बहुत खुश थी। अब तो मुन्ना पाठशाला जाने लगा था।

एक दिन अचानक सब पर गाज गिरी। सावन में कुसुम अपने गांव आई हुई थी। राम प्रसाद उसे लिवाने आए। एक रात उन्हें छाती में ज़ोर का दर्द उठा। कुसुम ने चूरन दिया। गरम ईंट से सेंक दिया। दर्द तो बढ़ता ही गया। कुसुम का भाई डाक्टर साहब को बुलाने के लिए दौड़ा। डाक्टर साहब के आने से पहले राम प्रसाद की सांस छूट गई। कुसुम का रो-रो कर बुरा हाल हो गया।

ऐसे ही एक महीना बीत गया। ससुर और बड़ी ननद दोनों कुसुम को ही कोसते रहते। ससुर कहते—"हाय, मेरे बेटे को मार डाला।" बड़ी ननद कहती—"अभागन, हमारे भाई को खा गई।"

बेचारी कुसुम किससे अपना दुख कहती। सिर्फ कुसुम की छोटी ननद विमला प्यार के दो बोल बोलती थी। विमला ने शादी के बाद पढ़ाई

की थी। अब वह अपने गांव के स्वास्थ्य केंद्र में नौकरी करती थी।

उसने सबको समझाया—"भैया दिल के दौरे से मरे। इसमें भाभी का क्या दोष?"

बीमे की रकम

एक दिन विमला ने सुना मास्टर जी हरी से बीमे के रुपयों की बात कर रहे थे। शादी से पहले राम प्रसाद ने दस हजार रुपयों का जीवन बीमा करवाया था। उसकी मौत होने पर पैसे के हक़दार की जगह हरी का नाम दिया था। उस समय उसकी बीवी और बच्चा तो थे ही नहीं।

विमला ने कुसुम से पूछा।

विमला—भाभी, तुम्हें भैया के जीवन बीमे के बारे में कुछ मालूम है क्या?

कुसुम—नहीं जीजी, उन्होंने तो कभी मुझसे रुपये-पैसे की बात की ही नहीं।

विमला—यही तो ग़लती है। सब लोगों को अपनी पत्नियों को बीमा, बचत खाता और ज़मीन का पट्टा वग़ैरा के बारे में बता कर रखना चाहिए।

विमला—देखो भाभी, भैया के बीमे में हरी का नाम है। लेकिन उस रुपये पर अब तुम्हारा और मुन्ना का हक़ है। हरी और पिताजी तुम्हारा वह पैसा हड़पना चाहते हैं।

कुसुम चुपचाप रोने लगी। उसे मुन्ने की पढ़ाई-लिखाई की चिंता थी। पैसे की ज़रूरत थी। पर उसे नहीं मालूम था कि वह क्या करे। विमला ने तार देकर अपने पति को बुलवाया। दोनों ने मिल कर एक वकील से बात की।

वकील ने कुसुम को कानून की तरफ़ से मिले विधवा के हक़ों के बारे में समझाया। वकील ने कुसुम की तरफ़ से कचहरी में एक अरज़ी दी।

कचहरी ने हरी को पैसा देने पर रोक लगा दी। पूरे मामले की सुनवाई हुई। फैसला हुआ कि राम प्रसाद के जीवन बीमे की रक़म पर उसकी पत्नी का और बच्चे का हक़ है। रुपया कुसुम को मिल गया।

ससुर ने घर में महाभारत खड़ा कर दिया। कुसुम को खूब बुरा-भला कहा।

वे बोले, "अब तो तुम्हें रुपया मिल गया। अब हमारे घर से निकल जाओ।"

अब कुसुम नादान नहीं थी। वह अपने हक़ जानती थी।

कुसुम—"पिताजी, यह घर बाप दादा का बनवाया हुआ है। इसमें मुझे और मुन्ना को रहने का हक़ है। मैं आपके साथ झगड़ा नहीं करना चाहती। पर मेरा हक़ मुझे मिलना चाहिए।"

विमला के पति ने भी अपने ससुर को समझाया।

पिताजी आप अपने बेटे के दुख में डूबे हैं। बहू का दुख नहीं समझ रहे। आपका बेटा तो चला गया। अब कुसुम और मुन्ना आपके घर की रोशनी हैं। उन्हें संभालिए।

मास्टर जी की समझ में बात आ गई। □

अप्रैल-मई, 1991